IJAER/ Oct-Nov 2012 /Volume-1/Issue-3/Article No-26/322-328 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

Vikas Kumar
Research Scholar
C.M.J.University, Meghalaya

Dr. Kuldeep Kumar
H.O.D
F.I.T. Mawana Road Meerut

हमारी भारत भूमि चिरकाल से ही अनेक महात्माओं, विद्वानों, तपस्वियों तथा प्रतिभापूर्ण मनीषियों की जननी रही है। भारत के इतिहास में इन महापुरूषों का उदय उस दीप्तिमान नक्षत्र की भांति हुआ जिसके ज्ञान रूपी प्रकाश से यह भारत भूमि जगमगा उठी। जब–जब अधर्म को वृद्धि तथा धर्म का लोप होता गया, तब–तब धर्म की स्थापना के लिए किसी न किसी महापुरूष ने इस पावन धरती पर जन्म लिया। इन महापुरूषों ने समय–समय पर जनता की भलाई की तथा उनकी सोई हुई भावनाओं को जागृत कर उन्हें उनके कर्त्तव्य मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी।

इन विलक्षण महान विभूतियों ने साहित्य, कला, राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने भाषा, धर्म और सम्प्रदाय के विवाद में न उलझकर मानव धर्म को ही परम धर्म माना। ये महापुरूष बड़े विद्वान, दानी और उदार थे। इनके कार्य बड़े गौरवपूर्ण थे। इन्होंने देश की उन्नति की तथा समाज को नया मार्ग दिखाया। इन महान विभूतियों ने मानव सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म माना। इन महापुरूषों ने सदै मानवता का प्रचार किया। इन्होंने विश्व को यही सन्देश दिया कि मानव तो ईश्वर की सन्तान है और पूरी मानवता प्रेम के धागे में बंधी है जो भी कोई इन्सान को दुःख देता है वह समझो ईश्वर के साथ धोखा करता है।

हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों ने विश्व को अहिंसा एवं सत्य का सन्देश दिया। विशेष रूप से भगवान बुद्ध तथा महावीर स्वामी जी ने तो साफ कहा था "अहिंसा परमों धर्मः"। जिसका अर्थ है सब प्राणियों से शत्रुता छोड़कर प्रेम भाव से रहना और सब कर्म मानवता की भलाई के लिए करना। इस महान देश की मिट्टी ने ऐसे अनेक महापुरूषों को जन्म दिया जो धार्मिक अन्धविश्वासों, आडम्बरों, मृत प्रायः विचारों और अर्थहीन संकीर्णताओं के विरुद्ध प्रहार करने में कुण्ठित नहीं हुये और इन जर्जर बातों से परे सबमें विद्यमान, सबको नयी ज्योति और नया जीवन प्रदान करने वाले महान जीवन देवता की महिमा प्रतिष्ठित करने में समर्थ हुए। हमारे भारत का यश और सम्मान बढ़ाने में देश के सभी भागों की विभूतियों ने योगदान दिया। इन्होंने जनता के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये। भारत में साधु–सन्तों एवं धार्मिक चिन्तकों की कमी नहीं रही। इन्होंने जाति–धर्म एवं ऊँच–नीच के भेद–भाव को व्यर्थ बताया और समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। इन्होंने भारतीय समाज को एकता के धागे में पिरोया और समाज को एक नये मार्ग पर ले जाने का प्रयत्न किया। इन्होंने कोरे पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा सत्य, अहिंसा, प्रेम और भक्ति में विश्वास किया तथा मानव की भलाई करने में सदैव आगे रहे।

प्राचीन काल से ही भारत में विभिन्न धर्मों तथा मतों के अनुयायी निवास करते रहे हैं, इन सबमें मेल जोल और भाईचारा बढ़ाने के लिए हमारे देश के महापुरूषों ने समय–समय पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास में अनेक ऐसे महापुरूष हुये हैं जिन्होंने ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के कारण प्राचीन काल से ही हमारे देश का नाम सारी दुनिया में विख्यात किया है। साहित्य, कला, विज्ञान, धर्म और दर्शन के क्षेत्र में यहाँ के महापुरूषों ने सदैव समस्त संसार का पथ प्रदर्शन किया है। इन महापुरूषों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा, कला–प्रियता तथा उदार मानवतावादी विचारों से समस्त संसार में गौरव अर्जित किया।

यदि इस महान देश की संस्कृति का गहन अध्ययन किया जाए तब विदित होता है कि समस्त भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसके मूल में स्थित समन्वय की भावना है उसकी यह विशेषता इतनी प्रमुख तथा मार्मिक है कि केवल इसी के बल पर संसार की अन्य संस्कृतियों के सामने वह अपनी मौलिकता की पताका फहरा सकती है और अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की सार्थकता प्रमाणित कर सकती है। इसी कारण इस देश की संस्कृति को विश्व की अन्य संस्कृतियों में उच्च स्थान प्राप्त है। जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भारत के ज्ञान, शक्ति तथा कर्म के समन्व की प्रसिद्धि है तथा जिस प्रकार वर्ण और आश्रम–चतुष्टय के निरूपण द्वारा इस देश में सामाजिक समन्व का सफल प्रयास हुआ है ठीक उसी

प्रकार संस्कृति तथा अन्यान्य कलाओं में भी भारतीय प्रवृत्ति समन्य की ओर रही है। यद्यपि इस महान देश ने तरह–तरह के संकट झेले हैं तथापि भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता एक ऐसा तत्व है जो आज तक विनिष्ठ नहीं हो पाया है। न जाने कितनी बार इस देश पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण किये गये किन्तु ये सब आक्रमणकारी अन्त में भारतीय बनकर ही रह गये और इस देश की महान संस्कृति में समाहित हो गये। इसी कारण इस महान देश की संस्कृति, भाषा वेश–भूषा, रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार कदम–कदम पर भिन्न हैं। यहाँ पर विभिन्नता में एकता सदैव एक ऐसे तत्व के रूप में विद्यमान रहा, जिसके बल पर भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज तक बना हुआ है और इसी अमृत तत्व के कारण भारतीय संस्कृति आज भी जीवित और स्थाई है और यही कारण है कि भारत भूमि इतने अलौकिक और महान पुरूषों की मालिका बनी। भारतीय संस्कृति के बारे में डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है–"भारतीय जीवन और संस्कृति का मूल आधार इसमें मुख्य रूप से विद्यमान नैतिक तथा आध्यात्मिक चेतना है। यह नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति को प्रभावित करती रही है। भारत की प्राण शक्ति इसकी नीति और इसके आध्यात्म मं निहित है। वास्तविकता यह ह कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा सम्बन्धी चिन्तन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है।" हमार सामने समय–समय पर उच्च चरित्र वाल तथा धार्मिक एवं आत्मिक चेतना से सम्पन्न महापुरूष आते रहे हैं। इन महापुरूषों ने हमारी संस्कृति को अमरता प्रदान की। भारतीय संस्कृति के मूल में अहिंसा को भासवना विद्यमान है जहाँ–जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्त का वर्णन हुआ है। वहाँ–वहाँ अहिंसा को ही प्रमुख स्थान दिया गया है। समस्त मानव जाति आज इसकी आवश्यकता का अनुभव कर रही है क्योंकि सभी यह बात अच्छी तरह समझ गये हं कि अहिंसा स ही मानवता की रक्षा हो सकती है।

हमारे देश के महान दार्शनिकों, विचारकों, समाज सुधारकां एंव प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय संस्कृति के अनुसार समय–समय पर समाज एवं शिक्षा को समुन्नत बनाने व इसमें सुधार करन हेतु अनेक परामर्श दिये व सिद्धान्त निश्चित किये किन्तु इन समस्त सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप में परिवर्तित करने हेतु आज तक कोई ठोस प्रयत्न नहीं किये गये और यही तथ्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषपूर्ण होने का सबसे बड़ा कारण है। कोरे सिद्धान्तों से ही काम नहीं चलता है। किसी भी समाज, व्यक्ति अथवा शिक्षा प्रणाली की उन्नति तभी सम्भव होती है जब सिद्धान्तों को व्यवहार में उतारा जाए। महान विचारकों, दार्शनिकों के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों को व्यवहार रूप में न उतारने के कारण ही वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में छात्र असन्तोष, अनुशासनहीनता, शिक्षा की एकांगी एवं निरूद्देश्य होना, शिक्षित बेरोजगारी, शिक्षक–शिष्य सम्बन्धों में प्रेम का अभाव, शिक्षा में व्यावसायिकता का अभाव, तकनीकी शिक्षा का अभाव, छात्र राजनीति आदि अनेक समस्यायें घर कर गयी हैं। लार्ड मैकाले द्वारा निर्मित भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषपूर्ण होने का प्रमुख कारण यह भी रहा है कि इस शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी शासन को चलाने के लिऐ अंग्रेजी पढ़े–लिखे क्लर्क पैदा करना और भारतीयों को ईसाई मजहब के साँचे में ढालना था। तब से आज तक शिक्षा का वही उद्देश्य चला आ रहा है। इस शिक्षा प्रणाली में भारतीय आदर्शों के लिए लेशमात्र भी स्थान नहीं है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली छात्रों को रोजगार देने व उनमें नैतिक गुणों का विकास करने में सक्षम नहीं है। छात्रों के शारीरिक विकास एवं व्यक्तित्व पर इसका प्रतिकूल असर पड़ रहा है। ये शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करने में सहायक नहीं है। आज शिक्षा द्वारा वर्ग भेद को बढ़ावा मिल रहा है। आधुनिक युग में शिक्षा में राजनीति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। आज शिक्षा के क्षेत्र में योग्य व्यक्तियों की नियुक्तियों को रोका जा रहा है तथा अयोग्य व्यक्तियों की नियुक्ति हो रही है जिससे अनेक समस्यायें उत्पन्न हो गयी हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय दार्शनिकों के विचारों का मूल्यांकन होना चाहिए तथा उनके शिक्षा दर्शन को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मान्यता देनी चाहिए।

आज यदि हम इस विषय मं अपनी प्राचीन शिक्षा प्रणाली तथा संस्कृति पर नजर डाले तो विदित होता है कि कभी यह महान देश शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में विश्व गुरू रहा है परन्तु आज हमारा देश सभी क्षेत्रों में पाश्चात्य देशों की नकल कर रहा है। आज हमारे देशवासियों ने प्राचीन दार्शनिकों को भुला दिया है। आज शिक्षा के विकास के लिए तथा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचीन भारतीय दार्शनिकों के सिद्धान्तों तथा विचारों को व्यवहार रूप में लाना होगा, तभी हमारी शिक्षा से सम्बन्धित समस्यायें हल हो सकेंगी और भारत पुनः अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त कर सकेगा और हमारे देशवासियों के सपने साकार होंगे।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

आज जब हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं और विज्ञान ने हमें उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है तब भी मानव सुख–शान्ति का अनुभव नहीं कर रहा है। आधुनिक युग को वैज्ञानिक युग कहा जाता है जहाँ विज्ञान ने मानव को असीमित शक्तियाँ प्रदान की, वही मनुष्य औद्योगिकीकरण से उत्पन्न अनेक समस्याओं से घिरा है। आज का मनुष्य एक

मशीन की तरह कार्य कर रहा है। प्रौद्योगिकी के दिन–प्रतिदिन उन्नति से सामाजिक एवं आध्यात्मिक वर्ग की उपेक्षा हो रही है। जहाँ विज्ञान ने विश्व की दूरी को कम कर दिया है वही अनेक भेद–भावों के आधार पर मानव–मानव का शत्रु बन गया है।

सहस्रों वर्षों की दासता के बाद भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। देश के नेताओं ने आर्थिक विकास तथा अन्य क्षेत्रों के विकास की योजनायें बनायी। शिक्षा के क्षेत्र में भी आमूल–चूल परिवर्तन लाने के लिए अनेकों समिति तथा आयोगों का गठन किया गया परन्तु शिक्षा नीति एकांगी एवं अनेक समस्याओं का केन्द्र ही बनी रही। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का उस पर प्रभाव बना रहा, यह पाश्चात्य प्रभाव इतना अधिक हो चुका है कि वह अपना वास्तविक रूप, जो हमारे प्राचीन दार्शनिकों ने निश्चित किया था, खा चुकी है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली भारतवासियों के लिए घातक सिद्ध हो रही है। बेरोजगारी में वृद्धि, भ्रष्टाचार पूर्ण समाज का विकास, परीक्षाओं में नकल करने की प्रवृत्ति, शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति छात्रों की उपेक्षा, आचार–विचार को तिलांजलि देकर येन–केन प्रकारेण सफल होने की वृत्ति आदि कुरीतियाँ इसी आधुनिक शिक्षा की देन है। आज के महान भारत में शिक्षा राष्ट्रीयता का विकास करने में सहायक नहीं है। इस आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अन्दर छात्रों को समाजोपयोगी एवं राष्ट्र सेवक बनाने का कोई साधन दिखाई नहीं देता। छात्रा को रोजगार देने तथा उन्हें शिष्ट एवं श्रेष्ठ नागरिक बनाने का कोई निश्चय नहीं जान पड़ता है। यदि ध्यान से अवलोकित किया जाये तो छात्रों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए भी कोई मापदण्ड हमारी शिक्षा प्रणाली के पास नहीं है। वास्तव में आधुनिक शिक्षा प्रणालो का विद्यार्थी के शारीरिक विकास पर भी बुरा असर पड़ा है। आज छात्रों के हृदय से सच्चरित्रता, संयम, शिष्टाचार आदि के भाव समाप्त हो गये हैं। जो नैतिकता और चरित्र संगठन भारतीय समाज का प्राण था उसकी उपेक्षा की गयी है। स्पष्ट रूप से कहा जाये तो आधुनिक शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करने में असफल रही है।

आज भारतीय शिक्षा का आवरण, भारतीय न होकर विदेशी है। आज भारतीय शिक्षा एकांगी है। आज हमारे सामने अनेक समस्यायें, अनुशासनहीनता पढ़ने के स्थान पर हड़तालें, घेराव–बन्द में रूचि लेना, विश्व अशान्ति, तनावपूर्ण पयावरण और अमानवीयता का बोल बाला है। आज हमारे मानवीय मूल्यों, सत्य, अहिंसा, प्रेम, करूणा, त्याग, बलिदान और देश–प्रेम आदि का ह्रास हुआ है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का काफी पतन हो रहा है, आज्ञापालन, अनुशासन, चरित्र और ईमानदारी आदि गुणों का दिन–प्रतिदिन लोप हो रहा है। आज का छात्र निरूद्देश्य होकर भटक रहा है। हमें अपनी शक्ति को भारत के पुनरूत्थान में लगाना होगा, नई चेतनाएँ लानी होगी। इसी नयी शक्ति के लिए नये विचारों एवं आदर्शों की आवश्यकता है इसके लिए हमें अतीत का अध्ययन कर वर्तमान में सुधार करते हुए भावी उन्नति का मार्ग अपनाना होगा। आज शिक्षा में प्रशासन से लेकर उसके पाठ्यक्रम एवं माध्यम तक हर बात पर राजनीति पूर्णतः छायी हुई है। आज प्रजातांत्रिक समाज के निर्माण की जगह शिक्षा द्वारा विभिन्न समुदायों एवं वर्गों के बीच दूरी बढ़ रही है। राजनीतिक दबाव के कारण ऐसे व्यक्ति शिक्षा के नेता एवं निर्माता बन बैठे हैं जिन्होंने कभी शिक्षा का अर्थ समझने का भी कष्ट नहीं उठाया। आज शिक्षा प्रणाली राजनीतिज्ञों के हाथ की कठपुतली बन गयी है इसका कोई नैतिक मापदण्ड नहीं रह गया है। जिस प्रकार प्राण न रहने पर शरीर सड़ने लगता है उसी प्रकार आज शिक्षा का स्तर, उसका कोई बौद्धिक मूल्य न होने के कारण दिन–प्रतिदिन गिर रहा है। यदि भारतीय प्रजातन्त्र में भारतीय शिक्षा को राजनीति के कोढ़ से बचाना है और शिक्षा का प्रयोग देश के नवयुवकों के निर्माण के लिए करना है तो हमें शिक्षा को वह स्वरूप देना होगा जो हमारे भारतीय दार्शनिकों ने, जो देश के लिए जिये और देश के लिए मरे, देश के सर्वांगीण विकास के लिए अपने लेखों, भाषणों व पुस्तकों के रूप में प्रस्तुत किया है। इसके सम्बन्ध में प्रो0 हेंडरसन ने लिखा है–"यदि शिक्षा केवल सामाजिक विरासत की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करती है तो वह केवल अतीत की पुनरावृत्ति करती है, यदि शिक्षा केवल बच्चों की अभिवृद्धि और विकास करती है तो वह सामाजिक विरासत की अवहेलना करती है लेकिन शिक्षा तो अभिवृद्धि और विकास की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक वातावरण के अंग के रूप में सामाजिक विरासत को उत्तम और बुद्धिमान पुरूषों एवं स्त्रियों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।" वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा जैसे अपना आधार खो ही बैठी है आज परम्परागत शिक्षा संस्थाएँ उथल–पुथल की अवस्था में हैं। आज इनके पाठ्यक्रम को उपादेयता पर भी प्रश्नचिन्ह लग गया है। ये विद्यार्थियों की प्रथम वरीयता नहीं रह गयी है। इन संस्थाओं में प्रवेश लेने वाले अधिकांश छात्र–छात्राएँ केवल समय काटने या अन्य विकल्प न होने के कारण ही इनसे सम्बद्ध हैं। आज के छात्र कक्षाओं के प्रति उदासीन हो चुके हैं और ऐसा प्रतीत होता है जैसे कह रहे हों कि इस पढ़ाई से उन्हें दो वक्त का भोजन भी नहीं मिलने वाला है। आज इन भ्रान्तियों को दूर करने की आवश्यकता है, प्राचीन दार्शनिकों के विचारों एवं सिद्धान्तों को शिक्षा प्रणाली में समावेश करके शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने तथा उसे व्यावसायिक बनाने की आवश्यकता है।

आज के महान भारत की शिक्षा की जड़े खोखली हो चुकी हैं तथा इसका कारण भारतीय शिक्षा पर पाश्चात्य प्रभाव है, कभी हमारा देश शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में "विश्व गुरू" रहा है, और यहाँ विदेशों से छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण करने

आते थे परन्तु आज वहीं महान् देश पाश्चात्य देशों की नकल कर रहा है और हमारे देशवासी अपने यहाँ शिक्षा ग्रहण करने की अपेक्षा अमेरिका, रूस, आस्ट्रेलिया आदि अनेक देशों में जाकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं क्योंकि वे समझते हैं कि भारत के शिक्षा केन्द्रों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा तो निरूद्देश्य है। आज की शिक्ष प्रणाली इतनी दूषित हो गयी है कि इसमें मूल्यों का स्थान नहीं रहा। भारतीय शिक्षा के इसी दोष की ओर संकेत करते हुए सन् 1952 में कानपुर में हुए अखिल भारतीय कांग्रेस के 40वें अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए "भारत कोकिला" सरोजिनी नायडू ने कहा था "हमारी शिक्षा ने हमें उपयुक्त मानसिक मूल्य एवं पृष्ठभूमि से रहित कर दिया है तथा आत्मप्रकाशन की अधिकारपूर्ण शैली को खोजने में जो सच्ची लगन एवं मौलिकता की अपेक्षा है उससे भी वंचित कर दिया है।"

हमारे देश की सरकारें आम जनता को दिखाने के लिए कि एक राष्ट्रभाषा एवं संस्कृति का उत्थान करने में निरन्तर प्रयत्नशील हैं, आयोगों और समितियों का निर्माण करती है परन्तु वास्तविकता यह है कि आयोगों द्वारा दी जाने वाली रिपोर्ट व सुझाव केवल फाइलों म ही सीमित रह जाते हैं। आज सभी कार्यालयां को कम्प्यूटरीकृत किया जा रहा है तथा कार्यालयों में अंग्रेजी भाषा में कार्य किया जाता है। इस विदेशी भाषा और संस्कृति के कारण ही हमारे देश के नवयुवकों में सत्यता, संयम, शिष्टाचार, नैतिकता, सेवाभाव, उत्तम चरित्र आदि समाप्त हो गये हैं। इसी कारण आज देश में सच्चे देशभक्तों और अच्छे नागरिकों का अभाव हो रहा है। आज हमारे देशवासियों के हृदय में राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक और समाजिक चेतना के लिए कोई स्थान नहीं है। आधुनिक समय बड़े ही विकट परिस्थितियां का समय है। जीवन के प्रत्येक क्षत्र में समस्यायें कदम–कदम पर खड़ी, मानव को चुनौतियाँ दे रही हं, इन समस्याआं का सामना केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसका व्यक्तित्व पूर्णरूपेण विकसित हो चुका हो अर्थात् जो शिक्षा के द्वारा परिस्थितियों के साथ समायोजन करन में दक्ष हो, एस व्यक्ति का निर्माण उस प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली द्वारा ही सम्भव हो सकता है जिसे हमारे प्राचीन मनीषियों ने अपने शैक्षिक विचारों में प्रतिपादित किया है।

आज हमारे देशवासियों को प्राचीन दार्शनिकों द्वारा बताये गये मार्गों का अनुसरण करके चरित्रवान बनने की आवश्यकता है जिससे व्यक्ति अपने समाज, राष्ट्र एवं विश्व समुदाय का उचित रूप से नेतृत्व कर सकता है। आज मानव पाश्चात्य संस्कृति की ओर दौड़ रहा है परन्तु वास्तव में आज उसे आध्यात्म ज्ञान एवं उत्तम चरित्र की अत्यन्त आवश्यकता है, अपेक्षाकृत भौतिक वस्तुओं के। अपने चरित्र एवं सत्कर्मों से हो मानव चिर आदरणीय एवं पूजनीय हो सकता है अपने अलौकिक चरित्र के कारण ही श्री राम, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी जैसे महापुरूषों ने देश–विदेश में ख्याति प्राप्त की तथा अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से संसार में ज्योति प्रज्जवलित की। आज इन्ही महापुरूषों द्वारा बतायी गयी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जिससे शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास हो सके तथा इन्हीं नैतिक गुणों का अनुसरण करते हुए विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्राचीन भारतोय दार्शनिकों के विचारों के अनुरूप ढालने की आवश्यकता है जिससे कि वह देश में आत्मनिर्भर, समाज सेवी, विनयशील, संयमी व दृढ़ निश्चयी नागरिकों का निर्माण कर सकें, मेरे विचार से शिक्षा का उद्देश्य, व्यक्ति को अच्छा प्रशासक, अच्छा अध्यापक, अच्छा अभियन्ता, अच्छा चिकित्सक अच्छा वकील, अच्छा व्यवसायी और अच्छा श्रमिक बनाने से पूर्व एक अच्छा व्यक्ति बनाना भी है और अच्छा व्यक्ति बनाने में महान विचारकों व शिक्षाशात्रियों के विचार निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

आज उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसका समर्थन भारतीय दार्शनिकों और शिक्षा सुधारकों ने किया है। हमें स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द आदि दार्शनिक द्वारा बताये गये मार्ग पर चलना है इससे ही देश की शिक्षा का स्तर सुधर सकता है जिससे देश में सच्चे देशभक्त और योग्य नागरिकों का निर्माण किया जा सकेगा और ऐसे नागरिक देश को निश्चित रूप से उन्नति के शिखर की ओर ले जायेंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने भारतीय संस्कृति के समर्थक, भारत की प्राचीन संस्कृति की गाथा, संसार में सुनाने वावली, स्वामी विवेकानन्द तथा वेदों के प्रकाण्ड पंडित, समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक, स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, जहाँ शिक्षा का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है, उनके विचारों के अनुरूप परिवर्तन करके, छात्रों को चरित्रवान, अच्छा आचरण, देशभक्त, निर्भीक, आत्मनिर्भर तथा स्पष्ट विचारधारा रखने वाले नागरिकों के रूप में बनाया जा सकता है। आज यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा प्रणाली में सुधार लाया जाये तो भावी राष्ट्र का चरित्र उज्जवल होगा तथा भारत फिर अपनी खोई हुई गरिमा प्राप्त कर सकेगा। आज शिक्षा के क्षेत्र में जो समस्यायें हैं उनका समाधान इन मनीषियों के शैक्षिक विचारों और सिद्धान्तों को व्यवहार रूप में उतार कर ही किया जा सकता है। इनके विचारों का प्रयोग शिक्षा प्रणाली में करके शिक्षा का स्तर ऊँचा उठ सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रथम अध्याय में प्रस्तावना, अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व, अध्ययन के स्रोत तथा अध्ययन की सीमा की विवेचना की है। तृतीय अध्याय में स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों की विवेचना तथा उनकी शिक्षा को देन, चतुर्थ अध्याय में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की विवेचना तथा उनकी शिक्षा को देन, पंचम अध्यांय में इन दोनों मनीषियों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तथा षष्ठम अध्याय में उपसंहार और भावी अध्ययन के लिए सुझाव दिये गये हैं।

शोधकर्ता ने स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द दोनों ही महापुरूषों के शैक्षिक विचारों का विस्तृत अध्ययन करने का प्रयास किया है और यह बताने का प्रयास किया है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उनके विचारों के परिवेश में किस प्रकार बदला जाये कि वह पाश्चात्य आवरण को छोड़कर भारतीयता के आवरण को धारण करे। जिससे देश के बालकों के सर्वांगीण विकास में वह अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

समस्या कथन

"स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य

(क) स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

(ख) स्वामी विवकानन्द के शैक्षिक विचारों क अध्ययन

अध्ययन के स्रोत

प्राथमिक स्रोत–स्वामी विवेकानन्द द्वारा लिखित पुस्तका, पत्र तथा पत्रिकाएँ तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित पुस्तका, पत्र व पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" व अन्य पुस्तकों का गहन अध्ययन किया गया।

गौण स्रोत–(क) इस विषय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकों का अध्ययन किया गया।

(ख) इस विषय पर हुये शोध कार्यों का अध्ययन (प्रकाशित व अप्रकाशित)

अध्ययन का सीमांकन

समयाभाव के कारण शोधकर्ता ने भारतीय दार्शनिकों में से केवल दो महान दार्शनिकों स्वामी दयानन्द सरस्वती व स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। जिससे उनके शैक्षिक विचारों को प्रकाश में लाया जा सके और वर्तमान शिक्षा प्रणाली को आधुनिक भारत के संदर्भ में इन महान दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों के अनुरूप ढाला जा सके।

अनुसंधानकर्त्ता इस अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि प्रजातांत्रिक राष्ट्र में मानवतावाद, मानव जीवन के सभी पक्षों में प्रजातांत्रिक व्यवस्था चाहता है। यह प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण केवल सैद्धान्तिक नहीं वरन् व्यवहारिक भी है। वह मानव की आधारभूत परिकल्पनाओं को मिलने वाली चेतावनियों को जानता है इन चेतावनियों का पर्याप्त मूल्य होता है। इसलिए मनुष्य और उसके समाज की अभिवृद्धि की कोई सीमा निश्चित नहीं की जा सकती। व्यक्ति और समाज का विकास सामाजिक संदर्भ में ही किया जाना चाहिए। लोग प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण अपनाकर मानव को वैयक्तिक और सामाजिक अभिवृद्धि करके मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण से लोगों में इतनी सामर्थ्य आ जानी चाहिए कि वे अपनी प्रगति प्रसन्नता, स्वतन्त्रता और समानता के लिए स्वयं ही मार्ग प्रशस्त करने लगे। ऐसा करने में कोई न कोई त्रुटि हो सकती है जो सम्भावित है। ऐसी त्रुटियाँ व्यक्ति को स्वानुभव देती हैं जो अधिक उपयोगी होता है।

इस भारतीय जनतन्त्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के अनुरूप शिक्षा कैसी होनी चाहिए। इस विषय में शोधकर्त्ता निम्न निष्कर्ष पर पहुँचता है:–

1. जनतन्त्र में शिक्षा का उचित आदर्श रचनात्मक आदर्श है। यह नये प्रकार से ऐसे मनुष्यों का निर्माण करने का प्रयास करता है जो गणतन्त्र और मानव जाति के लिए अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो।

2. जनतन्त्र में शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति में ज्ञान, रूचियों, आदर्शों और शक्तियों का विकास करना चाहिए जिससे वह अपना उचित स्थान प्राप्त करें और उस स्थान का प्रयोग स्वयं, समाज और राष्ट्र की भलाई के लिए करें।
3. जनतन्त्र में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सभी को प्राप्त होना चाहिए। शिक्षा बिना किसी भेदभाव के सभी जाति, धर्म के लोगों को प्राप्त होनी चाहिए।
4. शिक्षा प्रणाली ऐसी हो कि प्रत्येक बालक को उसकी समस्त शक्तियों के विकास हेतु समान अवसर प्रदान किये जाये और विशेषकर मन्द बुद्धि वाले तथा प्रखर बुद्धि वाले छात्रों की रूचिया, योग्यताओं तथा क्षमताओं को ध्यान में रखा जाना चाहिये।
5. छात्रों को इस प्रकार का मानसिक, चारित्रिक व शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाये कि वे नागरिकों के रूप मं प्रजातान्कि तथा सामाजिक व्यवस्था में रचनात्मक तथा सृजनात्मक ढंग से भाग ले सकें।
6. जनतन्त्र की सफलता अनुशासन पर निर्भर करती है। अनुशासन बनाये रखने के लिए अध्यापकों द्वारा छात्रों के साथ सहानुभूति पूर्ण एवं मित्रवत व्यवहार किया जाना चाहिए।
7. शिक्षक एक मित्र, पथ प्रदर्शक एवं समाज सुधारक के रूप में कार्य करें।
8. शिक्षा के लिए यह भी आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में ऐसे विषय सम्मिलित किये जायें जिससे बालक तनाव, द्वन्द्व से मुक्त होकर परमानुभूति का अनुभव करें।

भावी शोध के लिए सुझाव

1. स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. भारत में राष्ट्रीयता के विकास में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
3. स्वामी विवेकानन्द और महर्षि अरविन्द के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. स्वामी दयानन्द सरस्वती और समकालीन भारतीय दार्शनिकों की शैक्षिक विचारधारा का समालोचनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. जयप्रकाश नारायण व स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. स्वामी दयानन्द सरस्वती और महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी श्रृद्धानन्द के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
8. स्वामी दयानन्द सरस्वती और जॉन डी0 वी0 के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
9. स्वामी दयानन्द सरस्वती और ऐनी बेसेन्ट के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
10. रविन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधो के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।
11. डॉ0 भीमराव अम्बेडकर और पं0 जवाहर लाल नेहरू के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
12. महर्षि अरविन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।
13. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद आर डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन क शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. स्वामी दयानन्द : सत्यार्थ प्रकाश
2. सुरेश भटनागर : आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, लॉयल बुक डिपो, मेरठ
3. हुमांयू कबीर : शिक्षा का भारतीय दर्शन, बम्बई, एशिया पब्लिशिंग हाऊस
4. एस0 पी0 चौबे : शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाज शास्त्रीय आधार, प्रकाशक–इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ
5. डॉ0 रमाकान्त दुबे : विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री, प्रकाशक, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
6. राम शक्ल पाण्डेय : भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2
7. राम शक्ल पाण्डेय : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2

8. राम शक्ल पाण्डेय : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
9. विवेकानन्द : शिक्षा संस्कृति और समाज, प्रभात प्रकाशन, 205 चावड़ी बाजार, नई दिल्ली
10. रघुनाथ पाठक : आर्य समाज की उपलब्धियाँ
11. गिरीश पचौरी : शिक्षा सिद्धान्त, लॉयल बुक डिपो, मेरठ
12. गिरीश पचौरी : शिक्षा दर्शन, ओरियन्टल पब्लिशिंग हाऊस, परेड, कानपुर
13. एन0 आर0 स्वरूप सक्सेना : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, लायल बुक डिपो, मेरठ
14. रमन बिहारी लाल : शिक्षा सिद्धान्त, रस्तौगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ
15. सरयुप्रसाद चौबे : शिक्षा दर्शन, यूनिवर्सल पब्लिशर्स, 1003, आगरा
16. स्वामी विवेकानन्द : शिक्षा, श्री रामकृष्ण आश्रम, कलकत्ता
17. 29 अप्रैल 2003 : मेरठ हिन्दी समाचार पत्र, अमर उजाला
18. जॉन, एस0 ब्रूबेकर : मार्डन फिलासफी ऑफ एजूकेशन टाटा मेग्रो हिल पब्लिशिंग कम्पनी प्राईवेट लिमिटेड, बम्बई, नई दिल्ली